IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शीर्षक :– बिहार के नगरीकरण में शिक्षा का योगदान

Dr. Vijay Kumar
Asst. Prof.
Dept. of Geography
D.S.W.E. College, Sohsarai,
Biharsharif, Nalanda (Bihar)

सारांश

बिहार का स्थान क्षेत्रफल के संदर्भ में 11वाँ एवम् जनसंख्या के संदर्भ में भारत में तीसरा स्थान रखता है। बिहार का क्षेत्रफल 94163 वर्ग कि0मी0 है, जहाँ 10.41 करोड़ लोग निवास करते हैं। बिहार में 2011 के जनगणना के अनुसार 11.3% लोग नगर में निवास करते हैं, जबकि भारत में 'नगरीय' जनसंख्या 31.16% है। बिहार की नगरीकरण की प्रकृति काफी धीमी है, जिसका मुख्य कारण है, कि बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है। स्वतंत्रता के पश्चात् बिहार के नगरीकरण की प्रकृति धीमी रहा फिर भी नगरीकरण की प्रवृति बढ़ता रहा है। 1951 में 6.42%, 1961 में 7.41%, 1971 में 7.97%, 1981 में 9.84%, 1991 में 10. 40%, 2001 में 10.47%, 2011 में 11.3% नगरीय जनसंख्या दर्ज की गई है। बिहार में नगरीय आबादी कम होने का मुख्य कारण कृषि आधारित राज्य का होना है। बिहार के नगरीकरण में धीमी गति से कृषि हो रही है जिसका मुख्य कारण प्रशासनिक, आर्थिक, व्यापार, व्यवसाय व अधिक संख्या में शैक्षणिक संस्थानों का होना है। बिहार के ज्यादातर प्रमुख शैक्षणिक संस्थान जिला मुख्यालय या अनुमण्डल मुख्यालयों मे अवस्थित है। शहरीकरण की प्रवृति गतिशील अवस्था में हैं। वर्त्तमान समय में अत्याधुनिक शैक्षणिक संस्थानों का खुलना नगरीकरण वृद्धि के प्रवृति में सहायक है।

शब्द संकेत :– शिक्षा, नगरीकरण, जनसंख्या, शैक्षणिक संस्थान,

परिचयः– बसावट की दृष्टि से अगर मानव बसाव पर विचार करते हैं, तो दो बातें सामने आती है– गाँव और नगर। मानव बसाव की अवधारणा विकास के क्रम में समय और समाज की मांग के अनुसार बदलती रही है। प्रारंभ में बिहार के नगर का स्वरूप भी गाँव जैसा रहा होगा, जो बाद में समाज के जरूरतों के अनुरूप कार्य–कलाप में परिवर्त्तन स्वरूप नगर में परिवर्तन होता गया। शिक्षा जगत में तकनीक व विज्ञान के विकास के फलस्वरूप छोटे कस्बे की आबादी में निरंतर वृद्धि से नगर का रूप ग्रहण कर लिया। कस्वों के कार्यकलाप में परिवर्त्तन आया। वहीं कालांतर में शहर का रूप लेता गया। बिहार के शहर प्रारंभिक अवस्था में प्रशासनिक व व्यवसायिक कार्य का केन्द्र था। सभ्यता एवं सांस्कृतिक के विकास के कारण वहीं प्रशासनिक व व्यवसायिक शहर प्रमुख शिक्षा का केन्द्र बना। वैसे तो गहन अध्ययन करने से पता चलता है, कि बिहार के सभी नगरों में प्रशासनिक, शैक्षणिक, व्यवसायिक कार्यकलाप का मिश्रण उदाहरण मिलता है। वर्त्तमान समय में बिहार के सभी प्रमुख शहर शिक्षण के क्षेत्र में प्रमुख नगर शिक्षण के क्षेत्र में उभर रहा है और शहर की जनसंख्या में लगातार वृद्धि हो रहा है।

अध्ययन का उद्देश्यः–

बिहार के नगरीकरण के प्रवृत्ति में शिक्षा का योगदान का अध्ययन निम्न उदेश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है।

1. बिहार के नगर की जनांकिकी संरचना को प्रस्तुत करना।

2. नगरीकरण के कारणों को बताना।

3. नगर के लोगों में कार्यकलाप में विभिन्नता होना।

4. नगर के विकास में शिक्षा का महत्व

आँकड़ा एवं विधि तंत्र

प्रस्तुत शोधपत्र प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ो पर आधारित है। प्राथमिक आँकड़ा को प्रश्नावली की सहायता से सर्वेक्षप द्वारा एकत्रित कर प्रस्तुत किया गया है द्वितीयक आँकड़ों को जनगणना निदेशालय से प्राप्त किया गया है। इसके साथ ही तथ्यों को प्रस्तुत करने के लिए मानचित्र तथा तालिका का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्रः–

बिहार के उत्तर में नेपाल', दक्षिण में झारखण्ड, पूरब में पश्चिम बंगाल व पश्चिम में उत्तर प्रदेश अवस्थित हैं। बिहार जनसंख्या के संदर्भ में तीसरा एवं क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से 11वाँ बड़ा राज्य है। इसकी सीमा का अक्षांशीय विस्तार 24^0 $20^{|}$ $10^{||}$ N से 27^0 $31^{|}$ $15^{||}$ और देशांतरीय विस्तार 83^0 $19^{|}$ $50^{||}$ E से 88^0 $17^{|}$ $40^{||}$ E तक फैला है। इसका क्षेत्रफल 94163 वर्ग कि0मी0 है। 2011 के जनगणना के अनुसार 10.38 करोड़ आबादी है। बिहार का जनसंख्या घनत्व 1106 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0मि है। प्रशासनिक दृष्टिकोण से 9 कमिश्नरी, 38 जिला एवं 535 उपजिला में विभाजित किया गया है। उतर से दक्षिण चौड़ाई 345 कि0मी0 एवं पूरब से पश्चिम लम्बाई 483 कि0 मी0 है। बिहार भारत के कुल भूमि का 2.86% क्षेत्रफल में 8.07% आवादी निवास करती हैं। शिक्षण के बदलते स्वरूप ने लगातार अत्याधुनिक शिक्षण संस्थानों का स्थापना तीव्र गति से हो रहा है।

नगरीकरण की अवधारणा

नगरीकरण लोगों के सामाजिक–आर्थिक क्रिया कलापों के बदलते स्वरूप का परिश्रम होता है। प्रारंभ में सभी कस्बों में प्राथमिक क्षेत्र का कार्य होता था, कालांतर में नहीं कस्वा द्वितीयक क्षेत्र तृतीयक क्षेत्र एवं चतुर्थ क्षेत्र के कार्यकलाप में परिवर्तित होता गया। कृषि क्षेत्र से लोग औद्योगिक क्षेत्र में प्रवेश किया। औद्योगिककरण, आधुनिक आधारभूत संरचनाओं का विकास एवं आधुनिक विज्ञान एवं तकनीक शिक्षण का विकास तीव्र गति से प्रारंभ हुआ फलस्वरूप शहरीकरण का उदय होना प्रारंभ हुआ। किसी कस्बा को शहर की मान्यता देने के लिए तीन शर्तें आवश्यक रूप से होना अनिवार्य हैं–

(i) न्यूनतम जनसंख्या 5000 हो,

(ii) कुल आबादी का 75% गैर–कृषि कार्य में संलग्न हो,

(i) जन घनत्व 400 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0मी0 हो।

उपर्युक्त तीनों शर्ते पूरी होने की दशा में ही किमी कस्बाकों नगर का दर्जा प्राप्त होता है। नगर आर्थिक, सांस्कृतिक औद्योगिक प्रशासनिक, शैक्षणिक, सुरक्षा, धार्मिक आदि मानवीय कार्यों का केन्द्र होता है। खासकर शैक्षणिक कार्य बिहार के सभी कस्बों व नगरों में व्यापक रूप में होता है। बिहार का शायद ही कोई ऐसा शहर होगा, जहाँ शैक्षणिक महत्व की संस्थान न हो। बिहार के लगभग सभी शहरों में शिक्ष का केन्द्र है। बिहार के नगर में शैक्षणिक संस्थान की बहुलता के कारण जनआबादी नगरों में लगातार बढ़ती जा रही है।

नगरीकरण के निर्धारक बिन्दु

नगरीकरण के निर्धारण को निम्न बिन्दुओं के तहत अध्ययन करते हैं।

(i) जनसंख्या का प्रव्रजनः– नगरीकरण नगरीय जनसंख्या में होने वाले परिवर्तनों से पूर्णता सम्बंधित है। नगरों में इतनी अधिक संख्या में लोग कहाँ से आ गयें जिसकी वजह से नगरों की आवादी बिगत–50 वर्षों में तेजी से विकास हुआ। कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या के अनुपात में वृद्धि की हमें निम्न सम्भावनाएँ दिखाई देती हैं।

(क) गाँव से नगर की ओर जनसंख्या का पलायन होना, (ख) बड़ी संख्या में ग्रामीण बास्तियों को नगरी मे समाहित किया गया। (ग) कृषि कार्य से गैर कृषि कार्यों को अपनाना।

(ii) औद्योगिकरणः– औद्योगिकरण नगरीकरण का एक प्रमुख निर्धारक पैमाना है। अधिकांश औद्योगिक इकाईयों का स्थापना किसी शहर के आस–पास ही होता है। नगरीकरण औद्योगिक क्रांति की देन है। तकनीकी विकास तथा उद्योगों की स्थापना से नगरीकरण का उदय हुआ। बिहार के सन्दर्भ में अध्ययन करने से इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि नगरीकरण में शैक्षणिक संस्थानों का महत्वपूर्ण भूमिका है। बिहार में शिक्षा सम्बंधी कार्य सभी जिला मुख्यालयों में बदलता में किया जा रहा है।

(iii) आर्थिक क्रिया–कलापः– नगरीकरण के प्रमुख कारकों में आर्थिक क्रिया–कलाप भी एक महत्वपूर्ण कारक है। नगर में सभी प्रकार के क्रिया–कलाप किए जाते हैं। नगर किसी भी देश व राज्य के विकास के घुरी के रूप में जाना जाता है। नगर अपने समीपवर्त्ती क्षेत्र का क्रेता एवं विक्रेता के कड़ी का काम करता है। नगर में कपड़ा मण्डी, सब्जी मण्डी, लोहा मण्डी, गल्ला मण्डी, सर्राफा बाजार का केन्द्र होता है।

(iv) यातायातः– नगर में यातायात सम्बंधी कार्य भी किए जाते हैं। विश्व व्यापी भागदौड़ की जिन्दगी में नगर में यातायात की आवश्यकता को पूरी करता है। नगर में ही हवाई अड्डा बनाए गए हैं। एक राज्य से दूसरे राज्यों के लिए सड़क परिवहन का कार्य ज्यादातर नगरों में ही किए जाते हैं।

(v) शिक्षाः– इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के शिक्षा संस्थान होते हैं। जिसके प्रारंभिक विद्यालय, उच्च विद्यालय विभिन्न प्रकार के महाविद्यालय होते हैं। नगर शैक्षणिक भागों में आबादी काफी घनी होती है।

नगरीकरण की प्रवृति

नगरीयकरण की प्रक्रिया आर्थिक विकास को प्रभावित करती है। जिस राज्य में नगरीकरण का अनुपात जितना अधिक होगा वह राज्य उतना ही अधिक विकसित होगा। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, बिहार में 92.08 मिलियन व्यक्ति ग्रामीण अधिवासों में और 11.72 मिलियन व्यक्ति नगरीय अधिवासों में निवास करते हैं। इस प्रकार राज्य की 88.77% जनसंख्या गाँवों में और शेष 11.30% जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों निवास करती है। 2011 के जनगणनानुसार राज्य का सबसे बड़ा नगरीय जनसंख्या वाला जिला पटना है तथा सबसे कम नगरीय जनसंख्या वाला जिला शिवहर है। ज्ञातव्य है कि पटना बिहार का एकमात्र ऐसा नगर है, जिसकी जनसंख्या 25 लाख से अधिक है।

राज्य के सर्वाधिक नगरीकृत प्रतिशतता वाले पाँच जिले क्रमशः पटना 43.48% मुंगेर 28.30% भागलपुर 19.79% बेगुसराय 19.19% एवं शेखपुरा 17.14% हैं जबकि न्यूनतम नगरीकृत प्रतिशतता वाले 5 जिले क्रमशः समस्तीपुर 3.46% बांका 3.52% मधुबनी 3.68.1% कैमूर 4.02% शिवहर 4.28% है।

नगरीय क्षेत्र में औद्योगिक कार्यकलाप, सामाजिक, आर्थिक, व्यवसाय, व्यापार का शिक्षा का केन्द्र होता है। नगर मे ग्रामीण क्षेत्र से शिक्षा, रोजगार व आजीविका के लिए आते हैं और स्वामी रूप से बस जाते है, परिणाम स्वरूप नगर की आवादी में वृद्धि होती है। बिहार में नगरीकरण की प्रवृति धीमी है फिर भी नगर की आबादी बढ़ रही है। दिए गए आँकड़ा से नगरीकरण की प्रवृति को समझा जा सकता है।

Table – 1

TRENDS OF URBANIZATION IN BIHAR

Census Year	Total Towns	Towns		Urban Population	Urban Content	Devennial Growth (in percent)	Annual Exponential Growth Rate (Urban)
		Statutory Town	Census Town				
1901	44	-	-	979010	4.61	-	-
1911	43	-	-	919059	4.26	-6.12	0.63
1921	46	-	-	921915	4.32	+0.31	0.03
1931	48	-	-	1099896	4.69	+19.31	1.77
1941	58	-	-	1392850	5.30	+26.63	2.36
1951	73	-	-	1865911	6.42	+33.98	2.92
1961	88	82	6	2580578	7.41	+38.30	3.24
1971	106	99	7	3356334	7.97	+30.06	2.63
1981	119	114	5	5144945	9.84	+53.29	4.27
1991	138	131	7	6711785	10.40	+30.45	2.66
2001	130	125	5	8679200	10.47	+29.31	2.57
2011	199	139	60	11758016	11.30	+35.47	-

Source: Rural – Urban Distribution, Provisional Population Total, Bihar, Census of India, 2001 & 2011

उपर्युक्त दिए गए टेबुल में 1901 से 2011 तक का आँकड़ा दर्शाया गया है। 1901 में 44 शहर थे। कुल नगरीय आबादी 97.9 लाख थी जो कुल आबादी का 4.61% था। 1911 में नगरीय आबादी में कमी आई और 1901 में 44 शहर थे जो घटकर 43 हो गया कुल नगरीय आबादी 97.9 लाख से घटकर 91.9 लाख हो गया जो कुल आबादी का 4.26% था। पुनः 1921 में नगर की संख्या 46 हो गया, परन्तु नगरीय आबादी में काफी कम वृद्धि दर्ज की गई। 1921 में नगरीय आबादी 92.2 लाख हो गया जो कुल नगरीय आबादी का 4.32% रहा।

1931 में कुल शहर 48 एवं कुल आबादी 4.69%, 1941 में कुल शहर 58 एवं कुल आबादी 5.30%, 1951 में कुल शहर 73 एवं कुल आबादी 6.42% दर्ज की गई। 1961 में 7.41%, 1971 में 7.97%, 1981 में 9.84%, 1991 में 10.40%, 2001 में 10. 47%, 2011 में 11.30%, हो गया। वर्ष 2000 में झारखण्ड बिहार से अलग हो गया यही कारण है कि 1991–2001 के बीच नगर की आबादी नगण्य वृद्धि दर्ज की गई। नगरीय आबादी की वृद्धि काफी धीमी है, फिर भी नगर एवं नगरीय आबादी में लगातार वृद्धि दर्ज की जा रही है।

बिहार के नगरीय केन्द्र

2011 के जनगणना के अनुसार बिहार में 199 शहर हैं। पटना बिहार का एकमात्र शहर है जिसकी जनसंख्यरा 25 लाख से अधिक है। पटना, गया, मुजफ्फरपुर एवं भागलपुर तेजी विकास करने वाला शहर है। बिहार में 18 जिले ऐसे हैं, जहाँ की नगरीय आबादी 2 लाख से अधिक है, 12 शहर ऐसे हैं जिसक शहर की आबादी 2 लाख से अधिक हैं। बिहार में 11 जिलों की नगरीय आबादी बिहार की औसत नगरीय आबादी 11.30 से अधिक है।

बिहार में शिक्षा व्यवस्था

बिहार प्राचीन काल से ही शिक्षा का केन्द्र रहा है। नालन्दा विश्वविद्यालय एवं विक्रमशिला शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। स्वतंत्रता से पूर्व बिहार में एकमात्र पटना विश्वविद्यालय था जिसकी स्थापना 1917 में किया गया था। आजादी से पूर्व शिक्षा का दर काफी कम था। 2011 के जनगणना के अनुसार भारत का शिक्षा दर 74.04 है, जिसमें महिला का शिक्षा 65.46% और पुरूष का शिक्षा दर 82.14% हैं। वहीं बिहार का शिक्षा दर 63.82% है, जिसमें पुरूष का शिक्षा दर 73.39% है, एवम् महिला का शिक्षा दर 53.33% है। जो राष्ट्रीय औसत से कम है।

Table – 2

Toal Literacy Population in Bihar 2001 & 2011

Sl. No.	Districts	2001 (in percent)	2011 (in percent)
1	West Champaran	38.9	58.06
2	East Champaran	37.5	58.26
3	Sheohar	35.3	56.00
4	Sitamarhi	38.5	53.53
5	Madhubani	42	60.90
6	Supaul	37.3	59.65
7	Araria	35	55.10
8	Kishanganj	31.1	57.04
9	Purnia	35.1	52.49
10	Katihar	35.1	53.56
11	Madhepura	36.1	53.78
12	Sharasa	39.1	54.57
13	Darbhanga	44.3	58.26
14	Muzaffarpur	48	65.68
15	Gopalganj	47.5	67.04
16	Siwan	51.6	71.59
17	Saran	51.8	68.57
18	Vaishali	50.5	68.56
19	Samastipur	45.1	63.81
20	Begusarai	48	66.23
21	Khagaria	41.3	60.87
22	Bhagalpur	49.5	64.96
23	Banka	42.7	60.12
24	Munger	59.5	73.30
25	Lakhisarai	48	64.95
26	Sheikhpura	48.6	65.96
27	Nalanda	53.2	64.41
28	Patna	62.9	72.47
29	Bhojpur	59	72.79
30	Buxar	56.8	71.77
31	Kaimur (Bhabua)	55.1	71.01
32	Rohtas	61.3	75.59
33	Jehanabad	55.3	68.27
34	Aurangabad	57	72.77
35	Gaya	50.4	66.35
36	Nawada	46.8	61.63
37	Jamui	42.4	62.16
38	Arawal	-	69.54

Source: Census of India, 2001 & 2011.

बिहार के प्रमुख शैक्षणिक संस्थान

मेडिकल कॉलेज, इंजीनियरिंग कॉलेज, उच्च शिक्षण संस्थानों तथा रोजगारोन्मुखी शिक्षण संस्थानों की संख्या बिल्कुल कम थीं, जिसके कारण अधिकांश छात्र–छात्राओं को मेडिकल, इंजीनियरिंग की पढ़ाई एवं उच्च शिक्षण के लिए बिहार के छात्रों को बाहर के राज्यों मुम्बई, चेन्नई बेंगलुरू, दिल्ली आदि बड़े शहरों में जाना पड़ता था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बिहार में लगातार बिहार में शैक्षणिक संस्थानों का खुलना जारी है। प्रारंभिक विद्यालय से लेकर उच्च शिक्षा के केन्द्र स्थापित किए जा रहे हैं।

बिहार के विश्वविद्यालय

क्र0 सं0	विश्वविद्यालय के नाम	स्थापना वर्ष
1.	पटना विश्वविद्यालय, पटना	1917
2.	बी.आर.अम्बेडकर विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर	1952
3.	तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय भागलपुर	1960
4.	कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा	1961
5.	मगध विश्वविद्यालय बोधगया	1962
6.	राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर	1970
7.	ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा	1972
8.	नालन्दा खुला विश्वविद्यालय, नालन्दा	1988
9.	वीर कुँअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा	1992
10.	जय प्रकाश नारायण विश्वविद्यालय, छपरा	1992
11.	बी.एन.मण्डल विश्वविद्यालय मधेपुरा	1992
12.	मौलाना मजरूल हक अरबी–फारसी विश्वविद्यालय पटना	1998
13.'	चाणवच राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, पटना	2007
14.	आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, पटना	2009
15.	इन्दिरा गाँधी खुला विश्वविद्यालय पटना	–
16.	नालन्दा विश्वविद्यालय, राजगीर, नालन्दा	2009
17.	पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना	2018
18.	पूर्णिया विश्वविद्यालय, पूर्णिया	2018
19.	मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर	2018

उपर्युक्त विश्वविद्यालय से बिहार के सभी महाविद्यालय सम्बंधित है राज्य में 250 परम्परागत महाविद्यालय है एवम् राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त परम्परागत महाविद्यालयों की संख्या 225 है जिसमें स्नातर स्तर की शिक्षा दी जाती है। सभी जिलों में एक–एक अभियंत्रण महाविद्यालय की स्थापना का लक्ष्य रखा रखा गया है, जिसमें कई जिलों में अभियंत्रण की पढ़ाई प्रारंभ दो चुकी है। वर्त्तमान में 13 चिकित्सा महाविद्यालय सरकार क्षेत्र का कार्यरत है। 11 नए चिकित्सा महाविद्यालय खोलें जा रहे हैं। राज्य में 1954 से 2005 तक सरकारी क्षेत्र थे 13 पॉलीटेक्निक संस्थान स्थापित थे। वर्ष 2005 से 2020 तक की अवधि में 39 अभियंत्रण महाविद्यालयों की स्थापना की गई। नालन्दा विश्व के गौरव की पुर्नस्थापना के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नालन्दा

विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी है। इसके अतिरिक्त आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय तथा बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर जैसे राष्ट्रीय स्तर के विश्वविद्यालय खोले गए हैं। शिक्षा के क्षेत्र में परिस्थिति बिल्कुल बदल गई हैं। महिलाओं के लिए प्रत्येक जिले में अलग से आई.टी.आई तथा प्रत्येक अनुमण्डल में आई.टी.आई खोला जा रहा है। हर जिले में जी.एन.एम. संस्थान तथा प्रत्येक अनुमण्डल में ए.एन.एम. संस्थान खोला जा रहा है। राज्य भर में शैक्षणिक संस्थानों की बहुलता के कारण नगर की आबादी में भी लगातार वृद्धि दर्ज की जा रही है। अतः हम कह सकते हैं कि बिहार के नगरीकरण में शिक्षा एवं शैक्षणिक संस्थान की भूमिका महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

बिहार के नगरीकरण के संदर्भ में अध्ययन करने के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है। ग्रामीण क्षेत्र से नगर थी और जनसंख्या का पलायन हुआ है जिसका मुख्य कारण आजीविका का तलाश करना है। बिहार के नगरीकरण में कई पहलू हैं जिसमें शिक्षा का स्थान महत्वपूर्ण हैं। शिक्षा किसी भी देश व राज्य के विकास के लिए महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा एक महत्वपूर्ण अंग है मानव समाज के विकास करने के लिए शिक्षण के बिना सभ्य समाज की परिकल्पना नहीं कर सकते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि बिहार के नगरीकरण में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है।

References

1. Census of India 2001 and 2011.
2. Sinha, V.N.P. Nazim, M& Ahmad," Biha ka Bhoogol" Rajesh Publication, New Delhi.
3. Das. A.K. (2007): "Urban Planning in India, Rawat Publication, New Delhi.
4. Ataullah, M. and Musulimuddin M. (2002) Bihar ka Adhunik Bhoogol Brilliant Prakashan Patna – 4
5. Danik Jagran Daily Newspaper 13 Sept. 2020